



न॥ लंखं हाय रुत धकं॥ रुत धकं दाय॥ हूं जू वगुं धनं॥ वं धन मूडा
॥ थिया बतय॥ यं ३ वं ३ वं ३ मूल १०॥ ऊनि मूडा ता जू य दिव ध
नं॥ मूलन तका दाल ३॥ मूलन दि दन ताल पय॥ ॥ सिद्ध नन
भूत य दम वा याव॥ दाहा स्नान अकृत तय॥ अथ॥ कल सस्था
यन॥ वि धं लंखन धनं मूलन॥ लू वरु य दम यं ललन अकृ वि

दिता य अय लय कल वी व कचा॥ दाहा स्नान कचा॥ तथा॥ तस्थी य
नि॥ कृ स लि अकृत॥ ग्वर ग्वच॥ रुत मानं का॥ मरुत सा ता
तिता य॥ व लुन दिन॥ च न्द ना दि॥ य लो य वी त॥ ना ना पृष्ठा
लंका य॥ ॥ अथा दि॥ अ मू क र्ग म ज्ञा स्म त स य नि वा न स्य स
क द य त्व म भा वा क्का रु ल या फि काम ना र्थ॥ सा न दी य उ ज न्दा

दीष्टुदव तापजनकर्तुं ग्राह्यार्थमर्चनमः ॥ यथ्यं २ ॥ ॥ गुननमस्तु
 नादि आत्मयुक्तान् कथाय ॥ ॥ यथा २ दिवस स्थितवान् ॥ ॥ कृष्णनधिपति
 तं ॥ ॥ अथ २ अथ २ अथ २ ॥ अथादि ॥ अमक २ अमक २ अमक २ अमक २ अमक २
 करुल प्राप्ति कामसात्रदीयमदी गुनल्लादीष्टुदव ताप जनक मर्चि
 ॥ ॥ वावन्न न्दार्क मात्रता मदिमग्निजलावदं । तावत्स्विसृचिनी कालीच
 नस्याय ॥ स्थिती २ ॥ ॥ ॥ स पुतिस्था २ ॥ ॥ तायहाले ॥ धूनचाय ॥ ॥

वन्द १

वा

सारिणी निवान ॥ मरुतमा ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥
 किः सारिणी मरुतमा ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥
 चला नाय ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥
 नमथ गुनवन्तं ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥
 पंचवलि विध ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥
 मवलि गृह २ ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥ सारिणी मरुतमा ॥ ॥

वामं मुखं ये वलिं गृह्णन् स्वाहा ॥ गौं गणपतये वलिं गृह्णन् स्वाहा ॥ न
 र्जनाः दधुः यानिः कायः गजमुखः ॥ ॥ दधुः जगदीश्वरः ॥ त्रिवेदव
 ज्ञा ॥ नवात्माः श्रुत्या विंशति क्रमः स्रुतः सिद्धि लक्ष्मीः सत्य नीला
 तन्त्र प्रयानि वाचनित्या न क्रम लक्ष्मी ॥ ॥ गंगा वरुण मत्स्य व
 र्णाश्रका ॥ न्यासः ॥ सः श्रुत्या गुरु ॥ हां श्रुत्या लो नमः ॥ हां श्रु
 ता लो नमः ॥ हां मध्यमा लो वषट् ॥ हे श्रुता मि कार्णां हूं ॥ हां कनिष्ठा

लो वषट् ॥ सः करगन एषा लो श्रुता गुरु ॥ एवं दृढ यादि ॥ ॥ आपना
 लो श्रुता श्रुता दिव्या नमः ॥ जे पद्मासनाय नमः ॥ जे सिंहासनाय
 नाय नमः ॥ जे महिषासनाय नमः ॥ जे शुक्रासनाय नमः ॥ जे निगुफा
 सनाय नमः ॥ ॥ ॥ नमः ॥ जे हं मव धुं जिनगा च रुजा दण्डा निपा
 आनूर ह नि सं हित्वा महिषा सून्या गिना ॥ ॥ नमः ॥ ॥ आवा
 हा ना मूडा के न ॥ ॥ आवादि मय ॥ वन्दना क्ताय ॥ नाना उवा ने क्ताय ॥

धूपदीपनेत्रां॥ कलसलः यकान॥ धान॥ अन्नः रमय वरसीन॥
नर्पला॥ वं कुं प्राउयुवकुं यणी पाइ को मर्पया विनमः॥ ॥
करलि॥ वं जाणी मं सोजी नाउयदकुं उग्रचर सुनलम इती वं
सुदान करला मोरुमः मृत्पहननमः वाहा॥ ३॥ वलिमडा
यनेवान पूजा॥ वं श्री नंदव सुदिगलखा पायू॥ वलि
मः का लायनी पूजा॥ श्रीसन॥ वं जायना दिखान मलाय

वाणीर

मानमः॥ सिंहासनायनमः॥ महिषासनायनमः॥ ॥ गुं जां कुलि॥ वं
जीसः इरर्गको लायनीनमः प्रापायू॥ वलिमडा॥ ॥ पविवाजा विह
यादिगलखा पायू॥ वलिमडा॥ ॥ मगः सुवत्र मायूजा॥ श्रीसन॥ वं
पद्मासनायनमः॥ वं सिंहासनायनमः॥ महिषासनायनमः॥ ॥
यांजालि॥ वं इरर्गको लायनी सुवत्र मायूजा॥ वलिमडा॥
पविवाज पृ॥ जा॥ वं वं मायूजादिगलखा पायू॥ वलिमडा॥

त्रैकान्तसप्तमावृत्तिः ॥ चतुश्चमलुंममिदूकृत्यनक वीजं हन्वति ॥
 ह्यूननववर्णं हस्यं ॥ हन्ति सप्तमदहता विगता कनायसामन्त्रि
 यंदददुल्लुविनालकाली ॥ यथास्तुकावयं ॥ अयनावृत्तिः ॥
 सावनीयउग्रचतुर्दीष्टद्वयचैतविष्मैतसर्वयैत्रियर्लुमस्तु ॥
 नमस्तु ॥ दक्षिणाकाशा ॥ समयादिदकाकाय ॥ विन्दुतप्य
 ल ॥ ॥ मूर्ध्यायालंखनहाय ॥ वतनतिय ॥ सकलसंभनचक ॥ म

लुलया ॥ दवथाखानकृयः सकलं विथ ॥ न्यासः ॥ आचमन ॥ सूर्य
 साकि ॥ अथ ॥ अमक ॥ गोपासमयथ ॥ अमकाकंरुलयाफिकामः सा
 नदाय ॥ पात्रास्थाधनप्रतिगुवर्णदीष्टद्वयचैतसंपूर्ण
 थं कृतकर्मलसाकि ॥ सूर्याक्षमूर्धनमः ॥ यथानमः ॥ ॥
 मियुमिप्रदाजवस्थापनविधिः ॥ ॥ गतदिनीयादिप्रकमीता
 प्रथाथ ॥ स्थितहानममान ॥ सप्तमीकूकूवलिविसर्जन ॥ व

तस्मिन् समगविद्यावः वलिथाय सन्वाय ॥ **सिद्धिगि** यादि **सकमी** पू
जा ॥ ॥ **गुरुं** ॥ ॥ **तमा** महा **समी** पूजा विधि **सिद्धि** ग ॥ **मालका**
गात्रनाकावस्त्रानः पंचामृतस्नानः अलिस्नान ॥ चन्दनादियस्तु स्नानेन गथा
बलाशवमुने स्थित ॥ अथ **स्नान** वत्राह ॥ अथादि ॥ **कान्ध** पं रगा **गाम**
सर्वगुरु कृत्य सिद्धि जय काम नार्थं नाय लद **समी** पूजा कर्म विधिं
वदन्मिषे र्थं तं तावत्तं स्थि वमा च नत् ॥ चत्रस्या य **सिद्धि** नाह व ३ ॥

अथ पूजाक्रम ॥ ॥ **जल** रक्षा धनं ॥ **शित** त्वन **जा** च मनं ॥ ॥ **सूर्या** र्थं ॥
अथादि ॥ **कान्ध** पं रगा **गाम** यथा **गाम** मुक् **रुल** प्राफि का सः **सान** द
यमा नाय लस्या यन प्राड ग्रे वेष्टादि सूद वता पूजन कर्तुं ग्राह्यं य
सूर्य नमः ॥ **यू** यं नमः ॥ ॥ **गुरु** पूजा ॥ **विं** गुरु **प्रा** नमः ॥ ॥ **ग** ल **गुरु**
मूल नमस्काव ॥ **प्रा** ल **गाम** ॥ **न्या** सः ॥ ॥ **जल** यो **गुः** सं **स्व** स्था **पन** ॥
प्राय ग **रक्षा** धनः **गु** द्यादि **रक्षा** धन ॥ **प्रा** य **ग** **स्व** **पन** ॥ **आ** त्म **पूजा** ॥

धनद्यायः धूपयन ॥ मालिनीवा ॥ त्रैलोक्यवायनमः ॥ त्रैलोक्यवाच ॥ ऊय
त्रैलोक्यमालिनीदेवीति ॥ ॥ यच्चवलिविथ ॥ त्रैलोक्यवहुकतस्थाय ॥ त्रैलोक्य
केशपालाय ॥ सां सर्वथागिनीला ॥ चां चाप्रलुभे ॥ गंगगपतय ॥ सु
मयच्छाय ॥ गर्जनीः दधुः यानिः काशः गजमूडा ॥ विन्दुतय ॥ ॥
मालिनीरुय ॥ सलीनसचकनं वशावलखनहाय रुद्धकं ॥ चंथ
नवश्रि काय मूलतस्माधनं धी ॥ रुय ॥ चन्दकृततय ॥ पूजा

त्रैलोक्यसर्वजनमाहि नमः ॥ ३ ॥ वलिमूडा ॥ ॥ दन्त्रावाहन ॥ वि
देवपूजा ॥ दधुः गर्जनीः गजमूडा ॥ विन्दु ॥ ॥ त्रैलोक्यवाच ॥ अक्ष
त्रैलोक्यमालिनीमयूजा ॥ मूलया नासनयूजा ॥ धन ॥ त्रैलोक्यवाहनादिः पा
द्यादि ॥ चन्दनादि ॥ धूपः दीपः नैवेद्य ॥ नमस्कृत ॥ त्रिंशं जलि ॥ वलि
मूडा ॥ ॥ सिद्धिलक्ष्मीः शिष्यनसूदनीः नागध्वनयूजा ॥ ॥ त्रैलोक्य
मूडा ॥ न्यासः ॥ तः अक्षायकृत ॥ कनन्यास ॥ सां अक्षु

पुण्यां नमः ॥ सीतार्जुनीत्यां स्वाहा ॥ सर्वमक्षमायां वषट् ॥ सै जं नामिका
त्यां हूं ॥ सी कं तिष्ठायां वीषट् ॥ सः कं न तल य छ्वा र्थां अ सु य रुट्
॥ अ रु न्या स ॥ सां हृ द या य नमः ॥ सी नि न मं स्वा हा ॥ सर्वं ति स्वा ये व व
ट् ॥ सै कं व वा य हूं ॥ सां न गु गु या य वी षट् ॥ ला दा य उ ॥ सः अ सु य
रुट् ॥ वृ न्ति ॥ ॥ आसनयज्ञा ॥ श्रीं आ ध्या न ग क्त दि त्या नमः वा य ॥

जं पद्मासनाय वा य ॥ जं सिंहासनाय वा य ॥ जं महिषासनाय वा य ॥
जं कुक्कासनाय वा य ॥ जं तिलुक्कासनाय वा य ॥ ॥ ध्यानं ॥ जं
उगुचं अमहादबी ॥ अथ रुगवती लिवा तय चा मी कना तासाः वि
धुकाटी समयता ॥ यी न व क क्त नो रा गाः वि न वा चा न्ना मि नी ॥ कि
त्रि ती क लु ला का नी ॥ कं य ना स नी ने य ना ॥ न त्र मा ता वि सि रु ल हान
मा ना व लं वि नी ॥ अथा द हं उ वा क्तान् दि व्य व स्था मे रु धि ता ॥ स्व रु वा

वा नंतथा चक्रं वज्रो कृष्ण वना धनं । उमन हून पाप च दक्षिण न वि
ना जित ॥ रुट कंधन रुसं च गदा धनुः सार्वभौम रितं ॥ या हा त कुंजी
दसं च खेदा मं कं हा या हा कं ॥ विन्दु नू डा त था मि द्वि सि हा स
ना यनी स्मिता ॥ सिंहा सन समा नू डा म हिषा द वै र्जिता ॥ म हिषा
मन निहनी च सर्व दे हा विना हा नी ॥ हा या खा उ हा द रुक्म ॥ ख
दा ऊ उमन कं वि ना ॥ नू ड च ला पु च रुक्म ॥ य च लु ना यिका ॥ च ला

या ३

च लु व ती चै व च लु नू पा ति च लु का ॥ न व मी चा य च लु च म ध्य रुक्म
वि प्र सा चिता ॥ या च ना ला नू ला रुक्म ॥ नी ली लु च धु मु का ॥ पी रा च
या लु ला रुक्म ॥ या नी रुक्म द वि स्मिता ॥ म हिषा थ य मा न मु त
य स्मि न व चा कि रा क ॥ हा या रुक्म न य रुक्म न चा य च रुक्म दि
त रुक्मा ॥ नु वं धा ला म हा द वी ॥ म हा रु ग व ती न मा सु त ॥ ध्य
न प रुक्म पा रुक्म ॥ ॥ हा वा रु ना दि रुक्मा ॥ हा या दि ॥ च न्द

नादि काय ॥ धूप दीप ॥ नाना नैवेद्य काय ॥ रुद्रः मूलादि मूल
 सीतल पर्यंत काय ॥ ॥ तर्पणं ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 तर्पणाय नमः ॥ ३ ॥ धननाचम नमः ॥ ॥ उवाच ॥
 उं श्रीगणेशाय नमः ॥ उवाच ॥ ॐ नमः ॥ ॥ वलि मूला ॥
 मां नमः मूल ॥ ॥ नमः ॥ ॥ वलि मूला ॥
 वलि मूल ॥ ॥ नमः ॥ ॥ वलि मूल ॥

व अये पाप ॥ उं उं उं च ॥ अये पाप ॥ ॥ उं उं उं च ॥ ना मि कारे
 पाप ॥ ॥ उं उं उं च ॥ अये पाप ॥ ॥ उं उं उं च ॥ वले पाप ॥ ॥ उं उं उं
 वले पाप ॥ ॥ उं उं उं च ॥ अये पाप ॥ ॥ वलि मूला ॥
 ॥ वलि मूला ॥ ॥ गत कात्यायनी पूजा ॥ ॥ उवाच ॥ ॥ उं श्री
 मः कात्यायनी देवी ॥ वलि मूला ॥ ॥ वनिवानय ॥
 उं हं अये ॥ ॥ नं विजयाये ॥ ॥ सं अजिताये ॥ ॥ तं अयनाजिताये ॥
 ३ उं यमासनाय ॥ ॥ तिहासनाय ॥

ॐ
म
ह
ॐ
ॐ

मंजंरुनो२॥नंरुनो नमः॥वंमाह्नो२॥यंश्राकषरुनो२॥वलिमडा॥
 वुंवलंभनीयूजा॥वंयद्यमनायनमः॥सिंहासनाय२॥महिषासनाः
 य२॥पथाऊरलि॥वंदुर्गैरुवलीकायायनोवुंवनंभनीयाय॥व
 लिमडा॥॥पत्रिवा नु नयूजा॥जंवक्रायरुनो नमः॥कंमाह्नो
 २॥ॐवेषुवो२॥तंवा नाधो२॥यंॐदाय॥धेर॥यंजाम्भुयै२॥
 हांमहालक्ष्मी२॥वलिमडा॥॥वंॐदादिदगलाकपात्रो नमः॥

उपमासनाय२॥ज

मतामहाकालवलियूजा॥वंयमासनायनमः॥वंदंमहाकालाय सर्वस्य
 पुमर्दनायनमः॥३॥वलि॥वंदंमहाकालायवलिंगुद्र२स्वाहा॥मडा॥
 स्वप्नसुखं॥॥मताकृपवलियूजा॥वंनयासनाय२॥वंक्रांक्रांक्रां
 कृपायायनमः॥३॥वलि॥वंक्रांकृपायायवलिंगुद्र२स्वाहा
 ॥॥वाम्भुवलिपूजा॥वंभुं सिद्धिचाम्भुयै२॥३॥वलि॥॥या
 गिनीवलिपूजा॥वंसिंहासनाय२॥वंयांयीयूंयूं॥सर्वथागिनीया२॥



कं जान्य यद्वै । चत्वारः यः श्रुत्वा न्यः पुन न विचरु न तत्त्वः ७ भाग्यं तु
 दः सै हृदं अनतस्मै नम तयु न वनी रं न वं शी कृज हं ॥ ॥ भयना
 ति ॥ मानदी च उग्र च लुदी शुद्धं वता विरुत तस्य चै य नि धू र्मु म सु ॥
 नमस्तान ॥ दक्षिण चाय ॥ ॥ गत च नि पूजा ॥ लं खन नम ल च त ति दू
 क ॥ नम तस्मान न तय ॥ पूजा ॥ कां कालि र वं कं ध्व नी ला द द लु स य नमः ॥
 ३ ॥ स म न य का य ॥ वृ ति ॥ ॥ ततः य षु पूजा ॥ लं खन न वी का य
 अन ॥ लं खन हा य ॥ रु द्ध व कं ॥ नमः ॥ ध कं च त स्मान न तय ॥ पूजा ॥

चै का ग व ल य न नः ॥ ॥ दी स या ॥ नुं दी स व ल य न नमः ॥ ॥ य षु या
 न स र्पे आ रु म नु । क न ॥ नुं ह्रीं य षु या भा य वि प्र ह वि ष्व क र्म (ल धी म दि
 त न्ना जीवः प्र आ द या ॥ ॥ ॥ मूल न द्या उग्र च षु या म नु नै य षु जि न स
 ग्या भु मि य ॥ ॥ धू य दी य स म य न क ॥ द न्ना आ न ॥ य हा र्थ व ल
 अ हृ हा ल य म व स र्पे पु वा ॥ अ त स्वी घा ट या म्य च त स्मा अ र्क व (क्ष व
 धः ॥ के त न ॥ ॥ सै क ल ॥ अ ज ॥ १४ व त व न द ति ॥ अ या दि ॥ का म्य व र्ग
 अ र्क के म म र्क द य म र्क सि दि ऊ य का म नो र्थ तान दी य म हा न व मी
 ना स र्प १

५
वाचस्पति उवाच ॥ इति ॥ इदं वदन्तु जीमार्थं ॥ उवाच ॥ इदं वदन्तु
गीतः साजयः सगणये विवाच ॥ इति ॥ कार्गवद्विदेवरी तु यम
दं घाटयिष्य ॥ चन्दनोदकतोलते ॥ ॥ मृदायक ॥ लोमविश ॥ म
लुकाय समयमतय ॥ ॥ इति ॥ ॥ वरुण समयकाय ॥ गणेश ॥ ॥ ॥
गासनस्थारुवहयहन ॥ लोके नवामनुमृति ॥ स्थली ॥ स्थली ॥ स्थली ॥
प्रलोक रुनिहृणा लोकपाला रुनिद्रा ॥ यथा न कासिदेहादिह गण
हिता मातृन कुरु धाला ॥ यागिनी यागयका स्थल जल खवना याने म

दीप्ति
पु

पिबन्तु ॥ ॥ इव नुदवगा सर्वसन् ॥ अविनाशक ॥ यागिनी कुरु धाला ॥
समय हव्यवस्तिगा ॥ अविनाशक ॥ इव दह ॥ अजलामन ॥ मवचनग
॥ लोके वददना ॥ अष्टी सखसंयद ॥ यथा ॥ अष्टी कुरु लया दिकामः
सानदी यथा नाय ॥ उवाच ॥ इदं वदन्तु जीमार्थं ॥ उवाच ॥ इदं वदन्तु
वक्तुः अनधन ल ॥ सक्तमि सक्तानवृद्धि नमुयेथा ॥ इत्येवायना रु
वन्तु ॥ विन्दु ॥ ॥ कोमात्री प्रजाधन यायेइ ॥ ॥ इह आकाव ॥
वतः सिंधुः माहनीः सगुणदवस्कृष्टाय ॥ नवनां च ॥ ॥ सकल

संवत्सराविषय ॥ धर्मनंतिय ॥ मनुलयादवयास्वानकृय ॥ ॥ न्या
 सलिकाय ॥ ॥ नवमीरुद्रदवविमर्जमनव ॥ दणमिषुद्रुद्रदव
 विमर्जनयाय ॥ नामिय ३ ॥ सूर्यसाकिथय ॥ वाक् ॥ का ॥ य
 रागशामनयथा ॥ भा ॥ मुक्क ॥ रु ॥ ल ॥ प्र ॥ कि ॥ कामः ॥ मानदी ॥ य ॥ उ ॥ गु ॥ व ॥ पु ॥ दी ॥ य
 दवता ॥ पू ॥ जो ॥ सं ॥ य ॥ ल ॥ थ ॥ कि ॥ न ॥ क ॥ म ॥ ल ॥ सा ॥ कि ॥ ल ॥ प्र ॥ सूर्य ॥ श्र ॥ द ॥ न ॥ मः ॥ ॥ दृ ॥ य ॥ २ ॥
 ॥ नि ॥ श्र ॥ र ॥ मी ॥ न ॥ व ॥ मी ॥ पू ॥ जा ॥ वि ॥ वि ॥ स ॥ मा ॥ य ॥ ॥

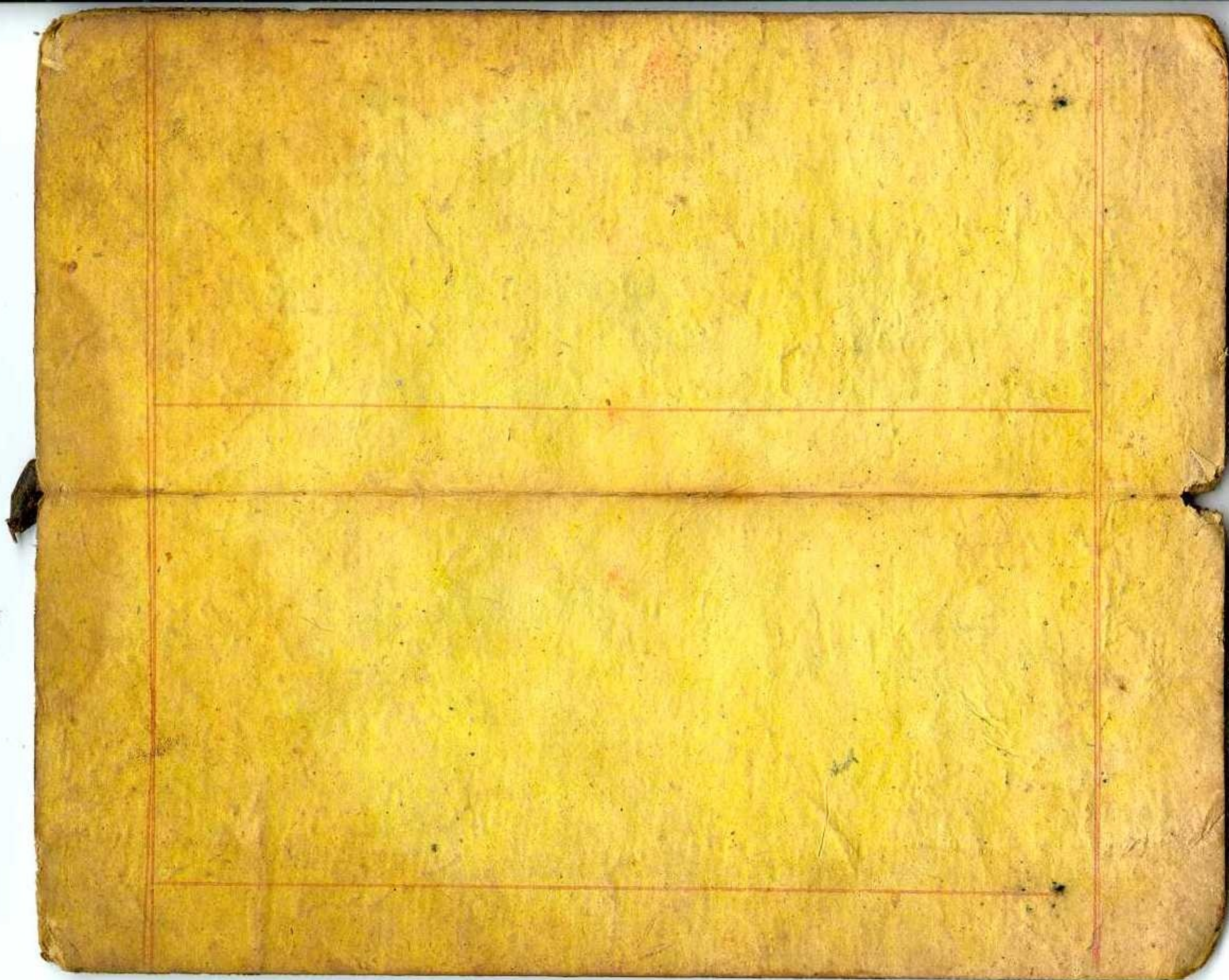
२ न पौर्णमासी ॥ पु ॥ न ॥ प्र ॥ ता ॥ म ॥ म् ॥ २
 ॥ अ ॥ ध ॥ म ॥ हा ॥ द ॥ ग ॥ मि ॥ पू ॥ जा ॥ ॥ पू ॥ जा ॥ उ ॥ थ ॥ उ ॥ प ॥ म् ॥ हा ॥ न ॥ कं ॥ या ॥ ॥ ॥ स ॥ म ॥ य
 हा ॥ य ॥ ॥ क ॥ ल ॥ ग ॥ वि ॥ स ॥ र्ज ॥ न ॥ या ॥ य ॥ ॥ न ॥ ॥ म ॥ य ॥ उ ॥ या ॥ य ॥ य ॥ थ ॥ म् ॥ कि ॥ पु ॥ जि ॥ गा
 सि ॥ क ॥ म ॥ स ॥ ॥ क ॥ ग ॥ न ॥ ॥ ॥ अ ॥ ति ॥ ल ॥ य ॥ ॥ व ॥ न ॥ न ॥ सि ॥ द ॥ न ॥ स ॥ गु ॥ ल ॥ भा ॥ द ॥ नी
 का ॥ य ॥ ॥ ॥ ध ॥ व ॥ ग ॥ स ॥ क ॥ ल ॥ सं ॥ मि ॥ त्र ॥ कं ॥ ॥ न ॥ व ॥ न ॥ ग ॥ द ॥ व ॥ या ॥ ग ॥ क ॥ या ॥ क ॥ म
 गु ॥ ल ॥ या ॥ द ॥ व ॥ या ॥ स्वा ॥ ने ॥ ध ॥ म ॥ कृ ॥ य ॥ ॥ स ॥ क ॥ ल ॥ सं ॥ वि ॥ य ॥ ॥ ॥ कं ॥ रु ॥ वि ॥ स ॥ र्ज ॥ न
 या ॥ य ॥ ॥ न ॥ क ॥ ल ॥ कं ॥ रा ॥ ये ॥ य ॥ थ ॥ म् ॥ कि ॥ पु ॥ जि ॥ गा ॥ सि ॥ क ॥ म ॥ स ॥ ॥ ग ॥ र्जा ॥ ध ॥ कं ॥ का
 य ॥ ॥ म् ॥ कि ॥ आ ॥ ग ॥ ल ॥ व ॥ हा ॥ य ॥ ॥ था ॥ वि ॥ न ॥ म ॥ ल ॥ का ॥ रु ॥ वि ॥ य ॥ ॥ ॥ ग ॥ ग ॥ ॥ रु ॥ व ॥ प्र ॥ वि ॥ स
 मि २

ऊनं ॥ उंगलुगकुपयंस्थानं स्वस्त्वनंगकुयुजिगं । समस्तनवयतीगनु
यननागमनं कुरु ॥ अकनः नायहोस्यः दलुप्रलामयाय ॥ सीहानमडा
कन ॥ ॥ स्वजलवक्राय ॥ उं हं हं हं चिन्न २ ॥ कलं एं ज १ ॥ हं हं हं स्वा
हा ॥ गमनयादावहृट् सिधात्र ॥ ॥ धनमं यो नयास्यं स्वकृता
लनं ॥ न्यासः ॥ मय्यादि ॥ काष्ठयलग्नास्मत्सजनस्य यथागामा
करुलयाप्रिकामः मानदीयं उग्रवदुदीष्टयजनसंयुक्तुर्थं क
महादममीश्वरकुरुजन १

नकर्मलमाकिरलगीसूर्याय नमः ॥ ययनमः ॥ ॥ कुरुया
दवययथसुराजय ७ यथासुखं विवदुः ॥ ॥ ॥ गिमहादममीश्व
जाविधिः ॥ ॥ ॥ ॥ अथचरुथीपूजा ॥

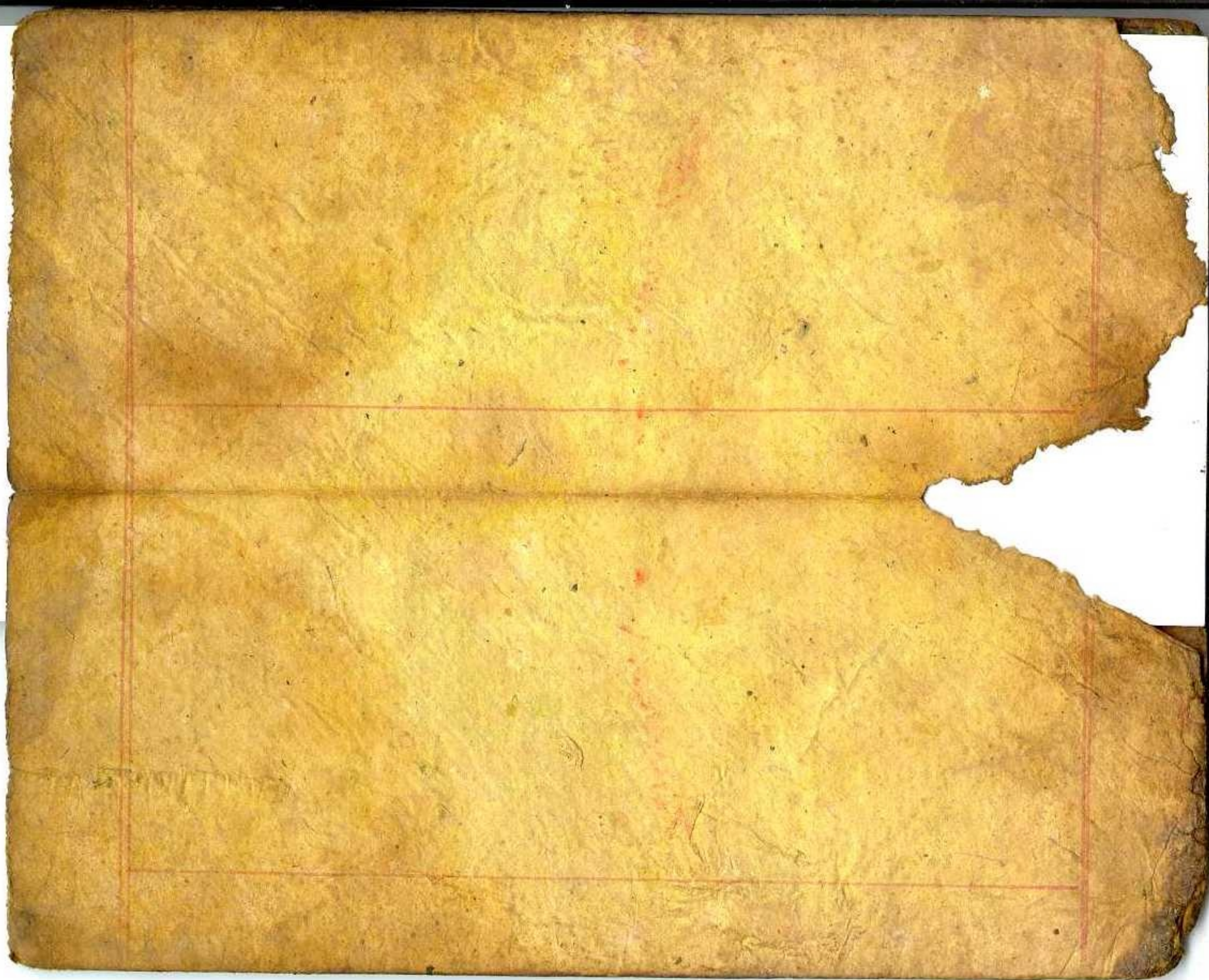
श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॥ वगुर्थि पूजाय नमः ॥ ॥ कायं नासि विगल
न. न्यासः ॥ ॥ दवे स्नानया च कथं गस्वानयल ॥ ॥ कायं नासि विगल
का ॥ ॥ गाय हल ॥ ॥ नवलचायं ववलि. प्रिवलियर्थं नं वाय ॥ ॥
उलरगधने ॥ ॥ विगलननासि ॥ ॥ वाय ॥ ॥ अय ॥ ॥ कायं नासि विगल
सगु श्री ॥ ॥ दवे नाया खल्यच गुर्दे गी पूजा कर्तुं शस्योय अय
नमः ॥ ॥ यथान्तमः ॥ ॥ धनं निम्यं यंच वलिग पूजा निम्यर्थ ॥ ॥ धूनवा

र्यमालनिवान ॥ ॥ यंच वलियुजा निम्यर्थ ॥ ॥ ८ ॥ दवा वाहन ॥
सन्वर्त्तन ॥ ॥ प्रिवलि पूजा निम्यर्थ ॥ ॥ ॥ धनं निम्यं उपन
पूजा ॥ ॥ गाय हल ॥ ॥ मयुषावनदा रुवंगु ॥ ॥ अय ॥ ॥ १० ॥ ॥ स्ना
न ॥ ॥ यथा मकि ॥ ॥ ॥ दकाय दार्थलनका क्काय ॥ ॥ गर्थ ॥ ॥ ॥ प्र
नयुगति ॥ ॥ ॥ दवासीर्वाय ॥ ॥ अरि संयकाय ॥ ॥ वगनमिय ॥
दवे स्नानका काय स्नानकृय ॥ ॥ न्यासः ॥ ॥ निम्यर्थ धूनक ॥ ॥ ॥









द्विपुत्रा पालताक ह्ययात
मिन्हा विग्रह

पपसित

मिष्टपुत्रा पालताक ह्ययात

ना माहि

ह्वे गेन

अति मना

मुखा मना

पाल काल

मां मना

चि मना

चिकी कुक्षी

बी गा

सिक

कैयसाह

ध्रुव लोकादि जाकि

नी पोदि कनी

नी कदि चतामची

मुभसम्वत् ६८७ मिनि अमरु

मुक्त ५ मुक्तो रश्मि माहाव

माहायात कन्दो वरुण लोका

अ

५८

